17 मार्च 2013, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 35, अंक : 24 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

मार्च (द्वितीय), 2013 (वीर नि. संवत्-2539) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

ताजा हुई पंचकल्याणक की मधुर स्मृतियाँ

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में दिनांक 22 से 24 फरवरी, 2013 तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का प्रथम वार्षिकोत्सव अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

विगत वर्ष 21 से 27 फरवरी 2012 तक श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित जिनालय का जयपुर में सम्पन्न ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति में आयोजित तीन दिवसीय प्रथम वार्षिकोत्सव में उपस्थित लोगों को ऐसा लगा मानो पंचकल्याणक दुबारा हो रहा हो।

ध्वजारोहण करते हुए श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर

इस अवसर पर दिनांक 22 फरवरी को प्रातः पंचपरमेष्ठी विधान के उपरान्त उद्घाटन सभा को अत्यन्त संक्षेप में पूर्ण कर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। वार्षिकोत्सव का प्रारम्भ श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण करके किया गया। प्रवचन मण्डप का उद्घाटन श्री जिनेन्द्र कुमार जैन दिल्ली एवं प्रवचन मंच का उद्घाटन श्री आलोककुमारजी जैन जयपुर के करकमलों से हुआ।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन के पश्चात् दिल्ली से पधारे डॉ. वीरसागरजी द्वारा 'वक्ता का स्वरूप' विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदीका जयपुर ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी जयपुर, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री सुरेशजी जैन शिवपुरी, श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई, श्री जिनेन्द्रजी जैन दिल्ली, श्री राजेन्द्रजी दोशी मुम्बई आदि महानुभाव मंचासीन थे। विद्वत्वर्ग के अन्तर्गत डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलकुमारजी 'धवल' भोपाल मंचासीन थे।

सामान्यतः जब भी कार्यक्रम होते हैं, तब एक दिन उद्घाटन एवं एक दिन समापन समारोह की सभा में चला जाता है, अतः इस बार कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में अभिनव प्रयोग करते हुए माल्यार्पण आदि औपचारिक कार्यों में समय व्यर्थ न गंवाते हुए इनके बिना ही सीधे डॉ. भारिल्ल का प्रवचन हुआ, जिससे उपस्थित जनसमुदाय को अधिकतम जिनवाणी सुनने का अवसर मिला। इस अभिनव प्रयोग की सभी ने

उद्घाटन सभा के अवसर पर मंचासीन महानुभाव

सराहना करते हुए इसे आगे भी चालू रखने का सुझाव दिया।

इस महोत्सव में गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन, आत्मार्थी विद्वानों द्वारा प्रवचन, पंचपरमेष्ठी विधान, जन्मकल्याणक की राजसभा, तपकल्याणक की इन्द्रसभा, टोडरमल महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा देव-शास्त्र-गुरु एवं स्नातक विद्वानों द्वारा निमित्त-उपादान विषय पर गोष्ठी, जिनेन्द्र भक्ति आदि अनेक कार्यक्रम विशिष्ट आकर्षण का केन्द्र रहे।

समारोह में आयोजित पंचपरमेष्ठी विधान के आमंत्रणकर्ता श्रीमती प्रेमवती मातेश्वरी श्री नीलेश कुमार ऋषभ कुमार जैन परिवार दिल्ली एवं श्री सुरेशचंद सुनील कुमार जैन परिवार बैंगलोर थे।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर द्वारा संपन्न हुये।

इन्द्रसभा व राजसभा में बही तत्त्वज्ञान की गंगा और जीवंत हो गई पंचकल्याणक की स्मृतियाँ -

दिनांक 22 फरवरी की रात्रि में जन्मकल्याणक की राज सभा का आयोजन किया गया। राजसभा में भगवान के माता-पिता के रूप में श्री शान्तिलाल-श्रीमती सुशीला देवी जैन जयपुर, यज्ञनायक श्री राजेन्द्र-प्रमिला

राज्य सभा में नाभिराय-मरुदेवी तत्त्वचर्चा करते हुए

दोशी मुम्बई, महामंत्री श्री विपिन-अध्यात्मप्रभा जैन मुम्बई के साथ-साथ अन्य राजा-रानी के रूप में श्री नरेश-ज्योति जैन श्योपुर, श्री नरेन्द्र-कल्पना बड़जात्या जयपुर, श्री समकित-सुहानी पहाड़िया किशनगढ, श्री के.एल.जैन-शकुन्तला जैन जयपुर आदि राजागण मंचासीन थे।

राजसभा का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी परिवार भोपाल ने स्वस्तिक बनाकर किया। कार्यक्रम का मंगलाचरण श्रीमती ममता गादिका ने अपने मधुर कंठ से प्रस्तुत किया।

इन्द्र सभा में इन्द्र-इन्द्राणी तत्त्वचर्चा करते हुए

दिनांक 23 फरवरी की रात्रि में आयोजित तपकल्याणक की इन्द्र सभा में सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी के रूप में श्री अशोक जैन-श्रीमती किरण जैन इन्दौर के साथ इन्द्रसभा के अन्य सभासदों के रूप में श्री अरिहंत-दिव्या चौधरी किशनगढ, श्री अजित-शशि तोतुका जयपुर, श्री आशीष-स्वानुभूति जैन मुम्बई, श्री निहालचन्द-अचरजदेवी जैन जयपुर आदि इन्द्रगण मंचासीन थे।

इन्द्रसभा का उद्घाटन श्री सुधांशुजी कासलीवाल परिवार जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया एवं मंगलाचरण श्रीमती ज्योति जैन जयपुर ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में राजसभा एवं इन्द्रसभा के सभी सदस्यगणों ने तत्त्वचर्चा के माध्यम से वातावरण को तत्त्वज्ञानमय बना दिया, जिसकी सभी साधर्मियों ने बहुत प्रशंसा एवं सराहना की।

इन्द्रसभा व राजसभा का मंच संचालन करते हुए

सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया। पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, श्री अकलंक जैन फिरोजाबाद इत्यादि विद्वानों के प्रासंगिक भक्ति गीतों ने सभा को मधुरता प्रदान की।

इन्द्र सभा व राज सभा के आयोजन में महाविद्यालय के छात्रों के साथ-साथ उपस्थित जनसमुदाय ने अत्यंत हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया।

धूमधाम से निकली विशाल शोभायात्रा -

कार्यक्रम के अंतिम दिन दिनांक 24 फरवरी को जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया।

शोभायात्रा में श्री जी के साथ
श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ

श्री टोडरमल स्मारक भवन से प्रारंभ हुई इस विशाल शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान को लेकर श्री अजितप्रसादजी दिल्ली रथ पर बैठे एवं श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ ने रथ के सारथी का पद ग्रहण किया। इस शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान के रथ के अतिरिक्त सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी, सभी इन्द्रगण, महाराजा नाभिराय एवं मरुदेवी अपने राजा-रानी के साथ चल रहे थे। श्री टोडरमल स्मारक, बापूनगर समन्वय, मालवीय नगर सेक्टर-3

पंचपरमागम को लेकर चलती महिला मण्डल की सदस्यायें

इत्यादि अनेक महिला मण्डलों की सदस्यायें अपने-अपने मण्डल की ड्रेस में पंचपरमागमों को सिर पर धारण कर गाजती-बाजती शोभायात्रा मे उत्साह और भक्ति का अपूर्व वातावरण बना रही थी। महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, अखिल

शोभायात्रा में नृत्य करते महाविद्यालय के विद्यार्थी

भक्ति और उल्लास में मग्न महिला मण्डल

रथ का स्वागत करते हुए गोदिका परिवार

भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जयपुर महानगर के सभी युवा सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में साधर्मी पुरुष भाई अपने धवल वस्त्रों में केसरिया दुपट्टा डालकर अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर एवं श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

रथ का स्वागत करते हुए भारिल्ल परिवार

यह शोभायात्रा श्री टोडरमल स्मारक भवन से

राजेन्द्र मार्ग, सावित्री पथ, पार्श्वनाथ चैत्यालय होती हुई लगभग 2.5 कि.मी. का मार्ग तय कर श्री टोडरमल स्मारक भवन पहुँची। शोभायात्रा में श्री सुरेशकुमारजी जैन शिवपुरी धर्मध्वजा लेकर सबसे आगे चल रहे थे। इस प्रकार वर्षों बाद बापूनगर समाज में इस प्रकार की श्रीजी की भव्य शोभायात्रा निकाली गई।

श्रद्धा और भक्ति के उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ महामस्तकाभिषेक -

स्फटिक प्रतिमा का अभिषेक करते अजितप्रसादजी दिल्ली

दिनांक 24 फरवरी को सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सर्व जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया। सीमंधर भगवान का प्रथम अभिषेक का सौभाग्य श्री सुशील कुमारजी गोदीका परिवार ने एवं विश्व की सबसे बड़ी स्फटिक रत्न की चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा का प्रथम अभिषेक श्री अजितप्रसादजी परिवार दिल्ली को प्राप्त हुआ।

पंचतीर्थ जिनालय में श्री अशोकजी जैन (अरिहंत केपिटल) इन्दौर द्वारा भगवान महावीर का, श्री जगनमलजी सेठी परिवार जयपुर द्वारा भगवान आदिनाथ, श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री दिलीपभाई शाह परिवार मुम्बई द्वारा श्री बाहुबली भगवान एवं श्री सुरेशचंदजी जैन शिवपुरी परिवार द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम अभिषेक किया गया।

भगवान महावीर का अभिषेक करते श्री अशोकजी जैन इन्दौर साथ में हैं - पं.रतनचंदजी भारिल्ल एवं निहालचंदजी जैन

इसके अतिरिक्त श्री विनोदजी जैन जयपुर द्वारा पद्मासन सीमंधर भगवान, श्री राजेन्द्रजी दोशी मुम्बई द्वारा युगमन्धर भगवान, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई द्वारा बाहु भगवान एवं श्री प्रेमचन्दजी बजाज परिवार कोटा द्वारा सुबाहु भगवान का प्रथम अभिषेक किया गया। (शेष पृष्ठ 6 पर...)

(पृष्ठ 3 का शेष ...)

तत्पश्चात् चतुर्मुख प्रतिमाओं के अन्तर्गत वासुपूज्य भगवान का प्रथम अभिषेक पण्डित शिखरचंदजी जैन विदिशा, श्री समकितजी पहाड़िया, श्री आशीषजी जैन मुम्बई व श्री विद्याप्रकाश संजय जैन सूरत की ओर से श्री जितेन्द्र उत्सव बाकलीवाल परिवार जयपुर ने एवं नेमिनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक श्री पवनजी बज जयपुर, श्री आलोकजी जैन जयपुर, श्री शान्तिलालजी चौधरी भीलवाड़ा व श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर द्वारा किया गया।

गोष्ठियाँ सानंद संपन्न -

पंचकल्याणक की स्मृति-स्वरूप आयोजित वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत देव-शास्त्र-गुरु एवं निमित्तोपादान विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

(1) दिनांक 22 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वर्तमान विद्यार्थियों द्वारा 'देव-शास्त्र-गुरु' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल (प्राचार्य-श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय), मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल एवं विशिष्ट अतिथि पण्डित शिखरचंदजी विदिशा मंचासीन थे।

इस गोष्ठी में मयंक ठगन द्वारा **पूजन किसकी व क्यों ?**, ऋषभ जैन द्वारा **देव का सामान्य स्वरूप,** अच्युतकान्त जैन द्वारा **शास्त्र का सामान्य स्वरूप,** हर्षित जैन द्वारा **गुरु का सामान्य स्वरूप,** कुलभूषण अम्बेकर द्वारा **देव-भक्ति का अन्यथा रूप,** साकेत जैन द्वारा **गुरु-भक्ति का अन्यथा रूप,** जिनकुमार जैन द्वारा **शास्त्र-भक्ति का अन्यथा रूप,** गोमटेश्वर चौगुले द्वारा **कुगुरु-कुदेव-कुशास्त्र के श्रद्धान का निषेध,** जीवेश जैन द्वारा **मोक्षमार्ग में देवादिक की अनिवार्यता,** जिनेश सेठ द्वारा **विभिन्न पूजनों में वर्णित देव-शास्त्र-गुरु,** कु. अनुभूति जैन द्वारा **देव-शास्त्र-गुरु से प्रयोजन सिद्धि,** विवेक जैन द्वारा **क्या वर्तमान में देवादिक की आराधना संभव** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण मयंक जैन अमरमऊ ने एवं संचालन अभिषेक जैन चिनौआ व नवीन जैन उज्जैन ने किया।

(2) द्वितीय गोष्ठी दिनांक 23 फरवरी को दोपहर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक विद्वानों द्वारा 'निमित्तोपादान' विषय पर आयोजित की गई।

गोष्ठी के अध्यक्ष तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं मुख्य अतिथि श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ व श्री निहालचंदजी जैन जयपुर थे।

इस गोष्ठी में डॉ. भागचन्दजी जैन जयपुर द्वारा **निमित्त का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद,** पण्डित राहुलजी शास्त्री नौगांव द्वारा **उपादान का स्वरूप एवं भेद-प्रभेद,** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर द्वारा **निमित्तोपादान की अवधारणा और आध्यात्मिकसत्पुरुष कानजीस्वामी,** डॉ. अरुणजी बण्ड अलवर द्वारा **कार्यकारण व्यवस्था-जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में,** डॉ. संजयजी जैन दौसा द्वारा **कार्यकारण व्यवस्था और निमित्तोपादान,** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा **निमित्तोपादान नयों के दृष्टिकोण से,** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा **षट्कारक-पंचसमवाय एवं निमित्तोपादान में समन्वय,** डॉ. श्रीयांसजी सिंघई जयपुर द्वारा **पंचलब्धि और निमित्तोपादान,** पण्डित विनोदजी शास्त्री 'चिन्मय' द्वारा **कार्य की उत्पत्ति का नियामक कारण कौन ?** विषय पर अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये।

गोष्ठी का मंगलाचरण विवेक जैन दलपतपुर ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं
पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली द्वारा आयोजित

47वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 21 मई 2013 से 7 जून 2013 तक

प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में लगने वाला प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष दिनांक 21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित होने जा रहा है।

प्रशिक्षण शिविर में देवलाली पधारने हेतु आप सभी को हार्दिक आमंत्रण है।

विशिष्ट कार्यक्रम -

ध्वजारोहण एवं शिविर उद्घाटन समारोह -	21 मई
अ.भा. जैन युवा फैडरेशन का अधिवेशन -	26 मई
टोडरमल स्नातक परिषद का महाराष्ट्र प्रान्तीय सम्मेलन -	1 जून
अ.भा. दि. जैन विद्वत्परिषद् द्वारा आयोजित विद्वत्संगोष्ठी -	2 जून
प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन -	6 जून
दीक्षान्त एवं समापन समारोह -	7 जून

हार्दिक अनुरोध :-

1. आपके यहाँ से कितने भाई-बहिन एवं प्रशिक्षणार्थी शिविर में पधार रहे हैं व कब से कब तक रहेंगे, इसकी पूर्व सूचना 1 मई तक जयपुर कार्यालय को अनिवार्य रूप से भिजवायें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

2. श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय हेतु छात्रों का चयन इसी प्रशिक्षण शिविर में होता है; अत: महाविद्यालय में प्रवेश हेतु अधिक से अधिक छात्रों को प्रेरणा देकर शिविर में भिजवायें।

संपर्क सूत्र -

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर,
जयपुर 302015 (राज.) फोन-0141-2705581, 2707458
Email-ptstjaipur@yahoo.com

देवलाली का पता - पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट, कहान नगर, लाम रोड, देवलाली, नासिक-422401 (महा.)
फोन नं. (0253) 2491044

सम्पादकीय – 95

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – १७०

अब १७० गाथा में कहा है कि अरहंतादि की भक्तिरूप परसमय प्रवृत्ति होने से यद्यपि साक्षात् मोक्षहेतुत्व का अभाव है, किन्तु परम्परा से मोक्षहेतुपने का सद्भाव है – ऐसा कहा है।

मूल गाथा इसप्रकार है –

सपयत्थं तित्थयरं अभिगदबुद्धिस्स सुत्तरोइस्स।
दूरतरं णिव्वाणं संजमतवसंपउत्तस्स।।१७०।।

(हरिगीत)

तत्त्वार्थ अर जिनवर प्रति जिसके हृदय में भक्ति है।
संयम तथा तपयुक्त को भी दूरतर निर्वाण है।।१७०।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि संयमतप संयुक्त होने पर भी नवपदार्थों तथा तीर्थंकरों के प्रति भक्तिभाव रूप बुद्धि का झुकाव होने पर भी तथा सर्वज्ञकथित जिनसूत्रों के प्रति भी जिसे रुचि है, उन ज्ञानी जीवों को शुद्धता मिश्रित शुभभाव की मुख्यता होने के कारण निर्वाण दूरतर है।

आचार्यश्री अमृतचन्द समयव्याख्या टीका में कहते हैं कि यहाँ इस गाथा में अर्हन्तादि की भक्ति रूप पर समय प्रवृत्ति में साक्षात् मोक्षहेतुपने का अभाव होने पर भी परम्परा से मोक्षहेतुपने का सद्भाव दर्शाया है।

जो जीव वास्तव में मोक्ष के हेतु से उद्यमी वर्तते हुए अचिंत्य संयमतप करते हुए भी तथा उत्कृष्ट वैराग्य की भूमिका पर आरोहण करने के योग्य प्रबल शक्ति उत्पन्न न की होने से नव-पदार्थों की भेदरूप श्रद्धा तथा अर्हतादि की भक्तिरूप पर समय प्रवृत्ति का त्याग नहीं कर सकता, वह जीव साक्षात् मोक्ष को प्राप्त नहीं करता, किन्तु देवलोक आदि के क्लेश की प्राप्ति कर परम्परा से स्वभाव सन्मुख होता हुआ मुक्ति प्राप्त करता है होती है।

कवि हीरानन्दजी इस गाथा एवं उसकी टीका के भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

नव-पद जुत जिन नमत जो, सूत्र विषै रुचिवंत।
संयम-तप-ब्रतवंत कौं, सिवपद दूर हवंत।।२४८।।

(सवैया इकतीसा)

निकट संसार आवै जीव मोख-सुख धावै,
संयम तपस्या भार भारी भारवाही है।
परम वैराग्य धारै आप प्रभुता संभारै,
आपतैं उतरिकै पै पररूप गाही है।।
ताकै पंच गुरु प्रीति पर समै रीति सारी,
न्याय करि सकै नाहीं प्रीति निरवाही है।
विद्यमान मोख नाहीं पर की प्रतीत माहिं,
परम्परा मोख पावै जिनने कहा ही है।।२४९।।

(दोहा)

सूच्छिम परसमयी पुरुष, मुकत न है ततकाल।
सुरग आदि सुख भुगत करि, क्रमकरि सिवसुख लाभ।।२५०।।

इसप्रकार इस गाथा एवं टीका के कथन का अभिप्राय यह है कि समस्त व्यवहार धर्म का पालन करते हुए भी जबतक स्पर्धक सूक्ष्म परसमय रत रहेगा, तबतक वह स्वर्ग के आकुलता जन्य सुखाभास में रहेगा; उसे उस भव में मोक्ष प्राप्त नहीं होगा और कालान्तर में जब वह भेद-विज्ञान के द्वारा आत्मस्वभाव के सन्मुख होकर निश्चय चारित्र में अर्थात् निज स्वरूप में स्थिरता प्राप्त करना तब मोक्ष पद प्राप्त करता है।

गाथा – १७१

अब गाथा १७१ में कहते हैं कि मात्र अरहंतादि की भक्ति जितना राग स्वर्गसुख प्राप्त कराता है। मूल गाथा इसप्रकार है –

अरहंतसिद्धचेदियपवयणभत्तो परेण णियमेण।
जो कुणदि तवोकम्मं सो सुरलोगं समादियदि।।१७१।।

(हरिगीत)

अरहंत-सिद्ध-जिनवचन सह जिनप्रतिओं के भजन को।
संयम सहित तप जो करें वे जीव पाते स्वर्ग को।।१७१।।

आचार्य श्री कुन्दकुन्द देव मूल गाथा में कहते हैं कि – जो जीव अरहंत, सिद्ध, चैत्य और जिनप्रवचन के प्रति भक्तियुक्त वर्तता हुआ परमसंयम सहित तप कर्म करता है वह स्वर्ग को प्राप्त करता है।

आचार्य श्री अमृतचन्द देव टीका में कहते हैं कि – जो जीव वास्तव में अरहंतादि की भक्ति के आधीन वर्तता हुआ परमसंयम प्रधान अतिथिव्रत आदि का पालन करता है, वह मात्र उतने रागरूप क्लेश से कलंकित मन वाला वर्तता हुआ जिसका अंतःकरण विषय विष की गंध से मोहित होता है – वह ऐसे स्वर्ग लोक को प्राप्त करता है, जो मोक्ष का अंतराय है तथा जहाँ चिरकाल तक रागरूप अंगारों से संतप्त होता है।

कवि हीरानन्दजी इसी भाव को काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

जिन-सिद्ध-चैत्य-सु-प्रवचन, भगति करै मन लाय।
संयमतपधारी पुरुष, सो सुरलोकहिं।।२५१।।

(सवैया इकतीसा)

जाकै चित्त विषैं अरहंत की भगति वसै,
सिद्ध का स्वरूप लसै चैत्यबिम्ब नमना।
जिनवाणी का सरूप लसै निजहिय में अनूप,
जाकै उपादान सुद्ध अंतरंग रमना।।
नाना तप तपै औ, निदान बिना क्रिया करै,
सम्यक् स्वरूप दृष्टि मिथ्या मोह वमना।
पर के प्रसंग सेती मोक्ष नाही विद्यमान,
सुरगादि सुख पावै रहे लोकभमना।।२५२।।

(दोहा)

देवग्रन्थ गुरु भगति तैं, पुण्य कलपतरु स्वाख।
सुरगादिक सुख विविधफल, फलें सकल अभिलाष।।२५३।।

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

17 मार्च 2013, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. PC / FN-32 / 2012-14

शोक समाचार

1. इन्दौर (म.प्र.) राघौगढ निवासी श्री सुशीलकुमारजी जैन का 13 फरवरी को इन्दौर में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप साधना नगर मंदिर इन्दौर में नित्य स्वाध्याय सभा का संचालन करते थे तथा टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों के सहयोगी थे।

2. दिल्ली निवासी डॉ. त्रिलोकचंदजी कोठारी का दिनांक 27 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप प्रसिद्ध उद्योगपति होने के साथ-साथ विद्वान अध्येता भी थे। अहिंसा और शाकाहार के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान उल्लेखनीय है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित गतिविधियों में आपकी सदैव अनुमोदना एवं सहयोग रहता था।

3. जयपुर (राज.) निवासी श्री माणकचंदजी गोधा का दिनांक 27 फरवरी को 81 वर्ष की आयु में शांतपरिणामों पूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत सरल स्वभावी एवं स्वाध्याय प्रेमी थे। आप लगभग 30-35 वर्षों तक आरोग्य भारती संस्थान में नि:स्वार्थ भाव से सेवायें देते रहे। टोडरमल स्मारक में लगने वाले प्रत्येक शिविर में धर्मलाभ लिया करते थे। आपकी स्मृति में 1500/- रुपये जैनपथप्रदर्शक हेतु प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत सुख को प्राप्त करें-यही मंगल भावना है।

(पृष्ठ 7 का शेष ...)

कवि हीरानन्दजी के काव्य का सार यह है कि जो व्यक्ति अरहंत, सिद्ध, जिनप्रतिमा और जिन प्रवचन की भक्ति करता है, संयम, तप और व्रतों का पालन करता है, वह देवगति को प्राप्त करता है तथा जिसके चित्त में जिनवाणी का चिन्तन-मनन चलता है, उसके उपादान में अर्थात् जिन आत्मा में शुद्धता की वृद्धि होती है।

जो निदान के बिना नाना प्रकार के तपश्चरण करता है, वह ज्ञानी पुराने मोह का वमन कर देता है।

इसप्रकार इस गाथा में पुण्य का फल स्वर्गलोक है – ऐसा बतलाया गया है, क्योंकि उक्त सभी क्रियायें सम्यक्त्व सहित होकर भी शुभभाव रूप हैं तथा शुभभाव मात्र स्वर्ग का ही हेतु है, मोक्ष का नहीं। जिसे मोक्ष प्राप्त करना हो, उन्हें वीतराग भाव रूप शुद्धोपयोगी होते हुए अन्तर्मुखी होना अनिवार्य है। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 25 मार्च	अलवर	विधान
26 व 27 मार्च	कोटा(मुमुक्षु आश्रम)	अष्टाह्निका
17 से 21 अप्रैल	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
22 से 27 अप्रैल	भोपाल (कोहेफिजा)	सिद्धचक्र विधान एवं महावीर जयन्ती
28 अप्रैल	भोपाल (मण्डीदीप)	मन्दिर शिलान्यास

क्या आप चाहते हैं ?

- आपके बालकों का जीवन जैन तत्त्वज्ञान के संस्कारों से सुशोभित हो।
- वे जैन तत्त्वज्ञान के ठोस विद्वान बनें।
- वे स्वपर के कल्याण में अपना जीवन लगायें।

यदि हाँ तो शीघ्रता करें,

अपने बालकों को जैनदर्शन शास्त्री कराने हेतु श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर में प्रवेश दिलायें।

इस विद्यालय में –

– दसवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी उत्तीर्ण मात्र 50 छात्रों को उपाध्याय कनिष्ठ (11वीं कक्षा) में प्रवेश दिया जायेगा।

– छात्र यहाँ 5 वर्ष तक रहकर राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से जैनदर्शन शास्त्री (स्नातक के समकक्ष) की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो पूरे देश में मान्य है।

– छात्रों की आवास/भोजन/शिक्षा/स्वास्थ्य की सभी उच्चस्तरीय सुविधायें संस्था द्वारा नि:शुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं।

प्रवेशार्थी छात्रों को –

21 मई से 7 जून 2013 तक देवलाली-नासिक (महा.) में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में रहना अनिवार्य है। महाविद्यालय में प्रवेश हेतु छात्रों का चयन इसी शिविर में होता है।

विशेष जानकारी एवं प्रवेश आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु संपर्क करें-

पण्डित रतनचंद भारिल्ल, प्राचार्य | पण्डित शान्तिकुमार पाटील, उपप्राचार्य | पण्डित सोनू शास्त्री, अधीक्षक,

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर

0141-2705581 मो. 9785643277 (सोनूजी शास्त्री) ptstjaipur@yahoo.com

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2013

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, एम.ए. द्वय (जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127